Absent

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष-2017

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1	4	0	हिन्दी

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक: 0402576

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

—	2	7	3	5	2	7	5	1	5

शब्दों में

—	दो	सात	तीन	पाँच	दो	सात	पाँच	एक	पाँ

[redacted]

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

→ क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 13

ग - परीक्षा का दिनांक 09 03 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक 351004

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
R P Shukla	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

→ प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
M.T. QURESHI LECTURER GOVT. EXCELLENCE H.S.S. DAMOH	R. S. THAKUR Varishth Adhyapak Govt. E...

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		2
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में	अंकों में

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

क्र. प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-1

(i) (ब) सामूहिक इकाईयों से।

(ii) (स) अति अल्पकालीन मूल्य।

(iii) (अ) प्रो. जे. बी. से ने।

(iv) (अ) संतुलित।

(v) (ब) अप्रत्यक्ष कर।

प्रश्नोत्तर क्र.-2

(i) प्रतिस्थापन।

(ii) संकुचित।

(iii) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया।

(iv) आर्थिक स्थिरता और नियंत्रण।

(v) रेलमंत्री।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPA

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 3

(i) सत्य ।

(ii) असत्य ।

(iii) असत्य ।

(iv) सत्य ।

(v) असत्य ।

प्रश्नोत्तर क्र. - 4

(i) बेलोचदार ।

(ii) उपयोगिता ह्रास नियम ।

(iii) प्रो० कीन्स ।

(iv) MR = MC ।

(v) निर्देशांक ।

OFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-5

(i) सन् 1935 में।

(ii) एक वर्ष।

(iii) सार्वजनिक कल्याण से।

(iv) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (केन्द्रीय बैंक)

(v) $\sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$

BSE

प्रश्नोत्तर क्र.-6

माँग की लोच का अर्थ :— माँग और कीमत में विपरीत संबंध होता है। माँग की लोच का आशय है कि वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने से माँग में किस दर से परिवर्तन होगा।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-7 (अथवा)

सकल घरेलू उत्पाद (Gross domestic Production) :—

किसी देश की सीमा के अंदर एक वर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

प्रश्नोत्तर क्र.-8

प्रभावपूर्ण माँग :—

प्रभावपूर्ण माँग से आशय रोजगार निर्धारण के उस बिंदु से होता है जहाँ पर समग्र माँग एवं समग्र पूर्ति आपस में बराबर होते है और एक-दूसरे को उसी बिंदु पर काटते (प्रतिच्छेदित) करते है।

प्रश्नोत्तर क्र.-9 (अथवा)

मुद्रास्फीति (Inflation) का अर्थ :—

मुद्रा स्फीति का आशय मुद्रा अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा का प्रसार होना है तथा जिसके फलस्वरूप मुद्रा का मूल्य गिरता है और कीमतों में अधिकाधिक वृद्धि होने लगती है। इसका अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-10 (अथवा)

विस्तार का अर्थ (meaning of Range) :—

विस्तार का आशय किसी समंक श्रेणी में उपस्थित सबसे बड़े पद मूल्य और सबसे छोटे पद-मूल्य के अंतर से होता है।

प्रश्नोत्तर क्र.-11

माँग को निर्धारित करने वाले तीन तत्व निम्नलिखित है :—

(1) वस्तु की कीमत :— किसी वस्तु की कीमत माँग को निर्धारित करती है। वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर माँग मे कमी हो जाती है तथा वस्तु की कीमत घटने पर माँग मे वृद्धि हो जाती है।

(२) उपभोक्ता की आय :— किसी वस्तु की माँग उपभोक्ता की आय पर भी निर्भर करती है। कीमतो मे परिवर्तन न होने पर यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है तो माँग में वृद्धि हो जाती है तथा आय कम होने पर माँग घट जाती है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(3) धन और आय का वितरण :—
धन और आय का समान वितरण होने पर माँग की प्रवृत्ति समान बनी रहती है अन्यथा असमान वितरण से पूँजी का केन्द्रीकरण हो जाता है, जिससे माँग प्रभावित होती है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 12

माँग तथा आवश्यकता में तीन अंतर निम्नलिखित है :—

	माँग (Demand)	आवश्यकता (wants)
1.	माँग में वस्तु की इच्छा, साधन तथा तत्परता के साथ निश्चित कीमत तथा निश्चित समय का होना आवश्यक है।	आवश्यकता में वस्तु की इच्छा, साधन तथा तत्परता केवल तीन महत्वपूर्ण तत्व होते है।
2.	माँग एक निश्चित समयावधि में उत्पन्न एवं पूर्ण होती है।	आवश्यकता अपेक्षाकृत कम समयावधि में उत्पन्न एवं पूर्ण होती है।
3.	माँग आवश्यकता पर निर्भर होती है।	आवश्यकता माँग का परिणाम होती है।

BSE

8 | योग पूर्व पृष्ठ | + | पृष्ठ 8 के अंक | = | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-13

प्रमाप विचलन का कोई एक सूत्र :—

$$= \sqrt{\frac{\Sigma f d^2}{N}}$$

यहाँ पर,

Σ = योग का संकेतक।

f = आवृत्ति।

d^2 = विचलनों का वर्ग।

N = आवृत्ति का योग। (कुल संख्या)

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्र.-14 (अथवा)

सह-संबंध का कोई एक सूत्र निम्नलिखित है:—

स्पियरमैन की अंतर कोटि विधि से सहसंबंध का सूत्र:—

$$r = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

यहाँ पर,

r = सह-संबंध का सूचक।

D^2 = विचलनों का वर्ग।

N = संख्या। (आवृत्ति का योग)

N^2 = संख्याओं का वर्ग।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. -15

व्याष्टि और समाष्टि अर्थशास्त्र में चार अंतर निम्नलिखित है :-

क्र.	व्याष्टि अर्थशास्त्र	समाष्टि अर्थशास्त्र
1.	व्याष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे- विशिष्ट फर्म, विशिष्ट परिवार इत्यादि।	समाष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे- राष्ट्रीय आय, मौद्रिक नीति इत्यादि।
2.	व्याष्टि अर्थशास्त्र योग को टुकड़ो मे तोड़ने की किया है।	समाष्टि अर्थशास्त्र योग को जोड़ने की आधार क्रिया है।
3.	व्याष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के छोटे भागों का अध्ययन किया जाता है।	समाष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन व्यापक दृष्टिकोण से किया जाता है।
4.	व्याष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत संस्थाओं की नीतियों के निर्माण में मदद करते है।	समाष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए नीतियों का निर्माण करती है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-16

पूर्ण प्रतियोगिता के बाजार की कोई चार विशेषताएँ निम्नलिखित है :—

(1) विक्रेताओ की अधिक संख्या :—
पूर्ण प्रतियोगिता मे विक्रेताओं की अधिक संख्या विद्यमान होती है उसका प्रमुख कारण यह है कि प्रत्येक विक्रेता के पास वस्तु की छोटी मात्रा उपलब्ध होती है।

(2) क्रेता को बाजार का पूर्णज्ञान :—
पूर्ण प्रतियोगिता मे क्रेता बाजार का मूल्य और चलन से जानता है उसी कारण वस्तु की कीमत में स्थिरता बनी होती है।

(3) यातायात लागत का पूर्ण अभाव :—
पूर्ण प्रतियोगिता मे क्रेता और विक्रेता एक ही स्थान पर होते है। अतः इसमे यातायात की लागत नही लगती है।

(4) एकरूप वस्तु :—
पूर्ण प्रतियोगिता में सभी विक्रेताओ के समीप एकसमान वस्तु होती है, जो रूप, रंग, गुण और आकार में समान होती है। इसमें वस्तुओ मे विभेद नही पाया जाता है।

4

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-17

मुद्रा के चार महत्व निम्नलिखित है :—

(1) उपभोक्ता को लाभ :— मुद्रा से उपभोक्ता को लाभ प्राप्त होता है। उपभोक्ता की आवश्यकता असीमित है किंतु साधन सीमित है अतः वह अपनी मुद्रा को इस प्रकार व्यय करना चाहता है जिससे सभी वस्तुओं से उसे समान संतुष्टि प्राप्त हो अर्थात् सभी की सीमांत उपयोगिता समान हो। यह कार्य मुद्रा द्वारा होता है।

(2) उत्पादक को लाभ :— किसी उद्योग में उत्पादक को यह निर्णय लेना पड़ता है कि उत्पादन कितनी मात्रा में हो, उसकी उत्पादन लागत कितनी होगी इत्यादि। उत्पादक इनका निर्धारण मुद्रा की सहायता से 'कीमत-यंत्र' द्वारा सुनिश्चित करता है।

(3) श्रम विभाजन में संभव :— मुद्रा का प्रयोग श्रम-विभाजन में किया जाता है। एक उत्पादन में कई उप-उत्पादन क्रिया होती है जैसे- भूमि, श्रम, पूँजी इत्यादि इनका निर्धारण मुद्रा के माध्यम से ही किया जाता है।

(4) एकता वृद्धि में सहायक :— मुद्रा एकता बढ़ाने में सहायक है क्योंकि एक देश में एक ही मुद्रा-प्रणाली

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

का प्रयोग किया जाता है जिससे पारस्परिक निर्भरता बढ़ती है और व्यापार और उद्योगों का विकास होता है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 18

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के चार लाभ निम्नलिखित है:—

(1) प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग :—

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पूर्ण प्रतियोगिता बढ़ जाती है तथा लोग उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ा देते है जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है तथा देश के प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग होने लगता है।

(2) एकाधिकार की प्रवृत्ति पर रोक :—

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में किसी वस्तु के उत्पादन में एकाधिकार की प्रवृत्ति पर रोक लग जाती है। सभी फर्मे किसी भी वस्तु का उत्पादन करने और उसे विक्रय करने के लिए स्वतंत्र होती है।

(3) संकटकाल में सहायता :—

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से विभिन्न देश एक-दूसरे की संकटकाल जैसे बाढ़, अकाल, सूखा इत्यादि में आवश्यक वस्तुओं और सामानों

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

की आपूर्ति करते है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि :—
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पारस्परिक निर्भरता बढ़ती है। संस्कृति, आचार-विचार का आदान-प्रदान होता है तथा उससे सहयोग की भावना प्रबल होती है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 19

प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर में चार अंतर निम्नलिखित है:-

क्र.	प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1.	जिस कर का कराघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है उसे प्रत्यक्ष कर कहते है।	जिस कर का कराघात एवं करापात अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ता है, उसे अप्रत्यक्ष कर कहते है।
2.	प्रत्यक्ष कर में निश्चितता का गुण पाया जाता है।	अप्रत्यक्ष कर में निश्चितता का गुण नहीं पाया जाता है।
3.	प्रत्यक्ष कर में मितव्यायिता पाई जाती है।	इसमें मितव्यायिता का गुण नहीं पाया जाता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

4.	प्रत्यक्ष कर नागरिकों में चैतन्यता जाग्रत करने में समर्थ होते है।	अप्रत्यक्ष कर में नागरिकों में चैतन्यता का अभाव पाया जाता है।

प्रश्नोत्तर क्र.-20 (अथवा)

विस्तार के दो गुण तथा दो दोष निम्नलिखित है:—

गुण (Merits):—

(i) विस्तार (Range) को समझना व गणना करना सरल है।

(ii) विस्तार में दो पद मूल्यों के बीच सभी समंक बिखरे होते है। यह उनकी स्पष्ट व्याख्या करता है।

दोष (Demerits):—

(i) विस्तार अपकिरण की एक अनिश्चित माप है।

(ii) इसमें केवल अधिकतम और न्यूनतम मूल्यों पर ही ध्यान दिया गया है।

BSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 21

(1) धनात्मक और ऋणात्मक सह-संबंध :—

धनात्मक सह-संबंध से आशय उन दो चरो में समान दिशा में परिवर्तन होने से है। यदि एक चर में परिवर्तन अर्थात् वृद्धि या कमी दूसरे चर में वृद्धि या कमी करती है अर्थात् दोनो मे समान दिशा मे परिवर्तन होता है तो उसे धनात्मक सह-संबंध कहते है।

ऋणात्मक सह-संबंध से आशय है कि यदि एक चर में वृद्धि या कमी दूसरे चर में कमी या वृद्धि कर देती है तो उसे ऋणात्मक सह-संबंध कहते है। इसमें विपरीत दिशा में परिवर्तन होते है।

(2) रेखीय एवं अरेखीय सह-संबंध :—

रेखीय सह-संबंध से आशय दो चरों में होने वाले समान आनुपातिक परिवर्तन से है। दोनो चरों में समान रूप से अनुपात में परिवर्तन होने चाहिए।

अरेखीय सह-संबंध से आशय दो चरो में होने वाले असमान आनुपातिक परिवर्तन से होता है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 22 (अथवा)

लागत वक्र के 'U' आकृति के होने के पाँच कारण निम्नलिखित है :—

(1) श्रम संबंधी बचतें :—

लागत वक्र के U आकृति के होने का एक कारण श्रम संबंधी बचतें है। जब उत्पादन मे वृद्धि होती है तो फलस्वरूप श्रम मे भी वृद्धि होती है जिसके कारण उनका विशिष्टीकरण संभव हो जाता है और उत्पादन लागत कम लगने लगती है।

(2) प्रबंधकीय बचतें :—

उत्पादन बढ़ने पर प्रबंध पर व्यय होने वाला खर्च बच जाता है क्योंकि एक कुशल प्रबंधक प्रबंध की व्यवस्था ठीक उसी प्रकार से कर सकता है जैसा उसने पूर्व मे कुशल प्रबंध किया था।

(3) तकनीकी बचतें :—

उत्पादन के साधनो मे तकनीकि परिवर्तन जैसे - बड़े मशीनों और औजारों का प्रयोग कर तकनीकी संबंधी बचते की जाती है। इनके माध्यम से उत्पादन लागत मे कमी होने लगती है और बचत प्राप्त होती है।

(4) विपणन संबंधी बचतें :—

जब उत्पादन मे वृद्धि होती है तो विपणन के लिए बार-बार विज्ञापन की आवश्य-

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

कता नही होती है। एक बार विज्ञापन हो जाने पर उसकी बचतें प्राप्त होने लगती है।

प्रश्नोत्तर क्र.-23

राष्ट्रीय आय लेखांकन के महत्व की विवेचना :—

(1) आर्थिक प्रगति की जानकारी :—

राष्ट्रीय आय लेखांकन न केवल राष्ट्रीय आय अपितु बचत, निवेश, विनियोग की भी जानकारी प्रदान करता है। इसकी सहायता से सरकार आर्थिक नीतियों का निर्माण करती है।

(2) श्रम संघों के लिए महत्व :—

राष्ट्रीय आय लेखांकन से श्रमिकों को यह ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय आय मे उनका कितना योगदान है तथा उन्हें कितना प्राप्त होता है।

(3) आर्थिक नीतियों के निर्माण मे सहायक :—

राष्ट्रीय आय लेखांकन राष्ट्रीय आय में वृद्धि और कमी को दर्शाकर सरकार की आर्थिक नीतियों के निर्माण में मदद करती है साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के उचित बँटवारा करने में सहयोग देती है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(4) आर्थिक विकास में सहायक :—

राष्ट्रीय आय लेखांकन बचत, विनियोग, निवेश को प्रदर्शित करती है। इसके माध्यम से किसी देश के जीवन स्तर का पता चलता है। यह आर्थिक विकास का सूचक होती है।

(5) व्यापार में सहायक :—

राष्ट्रीय आय लेखांकन से यह ज्ञात होता है फर्म में उद्योगों की तथा उत्पादन की स्थिति क्या है इससे प्रेरित होकर ही सरकार औद्योगिक नीतियों का निर्माण करती है।

B

E

प्रश्नोत्तर क्र. – 24 (अथवा)

कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं:

(i) एकपक्षीय सिद्धांत :—

कीन्स का रोजगार सिद्धांत मे समग्र माँग को महत्वपूर्ण मानकर समग्र पूर्ति की उपेक्षा की गई है। समग्र पूर्ति को उन्होंने स्थिर माना है जबकि ऐसा संभव नही है।

(ii) सामान्य सिद्धांत नही :—

केन्स का रोजगार सिद्धांत सामान्य सिद्धांत नही है। यह विकासित देशो मे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का संचालन करता है न कि

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

विकासशील देशों का, जहाँ अर्थव्यवस्था निम्न है।

(iii) अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित :—

केन्स का रोजगार सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता तथा बंद अर्थव्यवस्था जैसे अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है जो कि आधुनिक जगत में कहीं देखने को नहीं मिलती है।

(iv) अल्पकालीन सिद्धांत :—

केन्स का रोजगार सिद्धांत अल्पकालीन है। अतः अल्पकाल में समग्र मांग में परिवर्तन का उचित मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। अतः विद्वानों ने इसे गलत कहा है।

(v) उपभोग को अत्याधिक महत्व :—

केन्स ने उपभोग की प्रवृत्ति को अत्याधिक महत्व दिया है तथा प्रभावपूर्ण मॉंग की व्याख्या की है। उपभोग का समग्र मॉंग मे प्रभाव अल्पकाल में केन्स ने उचित रूप से स्पष्ट नहीं किया है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-25

एक अच्छी कर प्रणाली की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:—

(1) करारोपण के नियम के अनुकूल :—

एक अच्छी कर प्रणाली कर-देय योग्यता सिद्धांत के अनुकूल होना चाहिए अर्थात् उसे करारोपण के नियम जैसे-समानता, सुविधा, उत्पादकता इत्यादि के नियम के अनुसार होना चाहिए तथा उसमें यह गुण समाहित होने चाहिए।

B
S
E

(2) लोचता :—

एक अच्छी कर प्रणाली में लोचता का गुण पाया जाना चाहिए ताकि उसे संकटकाल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बदला जा सके।

(3) विभिन्नता :—

कर प्रणाली किसी एक कर जैसे-प्रगतिशील, आनुपातिक, प्रतिगामी न होकर इनका मिश्रित रूप होना चाहिए जो विभिन्न दशाओं में विभिन्न तरीकों से कार्य कर सके।

(4) अधिकतम सामाजिक लाभ :—

एक अच्छी कर प्रणाली में अधिकतम समाज के कल्याण और लाभ की भावना निहित होनी चाहिए। सड़क, भवन, रेल परिवहन इत्यादि

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOA

की सुविधा जनता के लिए करना उद्देश्य होना चाहिए।

(5) न्यूनतम सामाजिक त्याग :— एक अच्छी कर प्रणाली में जनता द्वारा कम-से-कम मुद्रा के रूप में त्याग करना आवश्यक होना चाहिए तथा सभी का समान त्याग होना अनिवार्य होना चाहिए तथा यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि गरीब वर्ग पर इसका कम प्रभाव पड़े।

प्रश्नोत्तर क्र. -26 (अथवा)

सह-संबंध का आशय :— सह संबंध से आशय दो चरो के पारस्परिक निर्भरता से है। यह बताता है कि एक चर में परिवर्तन का दूसरे चर पर किस दर से प्रभाव पड़ेगा।

प्रो किंग के अनुसार —" समंक श्रेणियों और समंक समूहो के मध्य कार्यकरण ही सह-संबंध है।"

सह-संबंध का महत्व निम्नलिखित है :—

(1) दो चरो के संबंधो को जानना :— सह-संबंध दो चरो के संबंधो को स्पष्ट करता है। यह बताता है कि

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

इनमें धनात्मक सह-संबंध है अथवा ऋणात्मक। साथ ही रेखीय-अरेखीय, सरल और आंशिक सह-संबंध को प्रदर्शित व्यक्त करता है।

(ii) एक चर के माध्यम से दूसरे चर का अनुमान लगाना:-

सह-संबंध दो चरों में एक चर के गणितीय मूल्यों से दूसरे चर का गणितीय मूल्य अनुमानित ढंग से व्यक्त करता है। इससे यह ज्ञात किया जाता है कि एक चर में परिवर्तन का दूसरे चर में परिवर्तन किस प्रकार होगा।

(iii) आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक:-

सह-संबंध अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति इत्यादि के मूल्यांकन में सहायक है। अतः इसकी सहायता से सरकार आर्थिक नीतियों का निर्माण कर माँग और पूर्ति में समन्वय स्थापित करती है।

(iv) अभौतिक वस्तुओं का मापन:-

सह-संबंध की सहायता से सुंदरता, बुद्धिमत्ता जैसे तथ्यों का भी आंकलन किया जा सकता है। यह स्पियरमैन की अन्तर कोटि विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है।

(v) अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कारक:-

सह-संबंध अर्थव्यवस्था में माँग एवं पूर्ति जैसी अनेक समस्याओं का हल निकालती है तथा इसे स्थिरता प्रदान करती है अतः अर्थव्यवस्था में यह

BSE

23

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 23 के अंक	=	कुल अंक

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में विद्यमान है।

BSE